संस्थापित १८६७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२३ ● अंक २० ● १५ मई २०१८ ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष अमावस्या संवत् २०७५ ● दयानन्दाब्द १६४ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० का एक प्रकल्प

स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी शिवनारायण लाल गुप्त आर्य वानप्रस्थ आश्रम का उद्घाटन पर सभा प्रधान का ओजस्वी उद्बोधन

आर्य समाज का शिक्षा क्षेत्र में सर्वाधिक योगदान–

डॉ० धीरज सिंह आर्य, सभा प्रधान

बहराइच। १२ मई आर्य समाज भग्गड़वा के माध्यम से जिला सभा बहराइच/श्रीवस्ती के संयुक्त तत्वावधान में आर्य वानप्रस्थ आश्रम का भव्य उद्घाटन सभा प्रधान डा० धीरज सिंह जी के करकमलों द्वारा सम्पन्न किया गया उस अवसर पर प्रधान जी ने ओजस्वी सम्बोधन में बताया आर्य समाज अपने प्रारम्भिक काल से शिक्षा का आन्दोलन चलाता रहा है। डी०ए०वी० शिक्षा एवं गुरूकुल शिक्षा का शुभारम्भ स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती द्वारा किया गया। स्वामी जी के तप–त्याग से प्राभावित होकर मु० अमन सिंह ने कांगड़ी ग्राम की सारी भूमि दान में प्रदान की थी उसी प्रकार श्री शिवनाराण जी गुप्त ने अपनी सारी सम्पत्ति दान में देकर दानवीर भामाशाह के नाम को पुनः स्मृतियों में ताजा कर दिया है। आने वाली पीढ़ी सदैव आपसे प्रेरणा प्राप्त करती रहेगी। आर्य वानप्रस्थ आश्रम भग्गडवा आर्य सामज के इतिहास में नींव का पत्थर बनेगा आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के द्वारा म० नारायण स्वामी जी द्वारा हरिद्वार में आश्रम की स्थापना की गई थी तब से लेकर आज एक नया इतिहास बनाया जा रहा है मैं उनका अभिनन्दन करता हूं। आर्य प्रतिनिधिसभा उ०प्र० के इतिहास का नया स्वर्णिम अध्याय होगा शिक्षा के आर्य कन्या विद्यालय इण्टर कालेज महाविद्यालयों की स्थापना आर्य सामज ने ही की थी जो देश भर में एक क्रान्तिकारी कदम है सरकार के बाद शिक्षा का बजट *आज भी सबसे अधिक आर्य समाज का है।*

सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने अपने उद्बोधन में क्षेत्र से आई आर्य जनता को बताया कि मनुष्य सामाजिक प्राणी है जो एक दूसरे के सहयोग से ही जीवन यापन करता हुआ अपने उद्देश्य में आगे बढ़ता है परोपकारी व्यक्ति का ही जीवन सफल होता है इसलिए परोपकार प्रिय बनने के लिए परमात्मा से प्रार्थना करते हुए पूर्वजों से प्रेरणा प्राप्त करनी चाहिये जैसी प्रेरणा हमारे श्री शिव नारायण गुप्त आर्य जी को प्रभु ने प्रेरणा प्रदान की है आपने अपने जन्म–जन्मान्तरों के शुभ संस्कारों का अभयुदय किया है। म० नारायण स्वामी जी के बाद अब इतिहास पुनः अंगडाई ले रहा है इस कार्यक्रम से उ०प्र० में नई जागृति पैदा हुई है अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री शिवनारायण गुप्त ने सभी को आशीर्वाद प्रदान किया और जीवन के अन्तिम समय तक सहयोग प्रदान करता रहूँ।'' यज्ञ आचार्य सोमव्रत शास्त्री ने सम्पन्न कराया अपने कुछ ब्र० को साथ लेकर आये और कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई उनका भी सभा आभार व्यक्त करती है ईश्वर भक्ति के सुन्दर भजन हरीश शास्त्री जी ने सुनाये/जिला सभा बस्ती, बहराइच, इकौना आदि– आदि स्थानों के आर्यों ने कार्यक्रम में बढ़चढ़ कर भाग लिया संयोजन श्री ब्रजेन्द्र देव आर्य ने किया कार्यक्रम में सभा प्रधान जी एवं सभा मंत्री जी ने मुख्य–मुख्य कार्यकर्ताओं और सभा के अन्तरंग सदस्य तथा जिलास्तर के अधिकारियों का अभिनन्दन किया गया। जिसमें मुख्य रूप से श्री जयप्रकाश भारती गाजीपुर, श्री जयप्रकाश पटवा श्रावस्ती, श्री रमेन्द्र देव आर्य बहराइच, अनिल आर्य सपत्नीक नीतू नैयर इकौना, देवाशीष गुप्ता भग्गडवा, चन्द्रकेतु आर्य श्रावस्ती, संजय तिवारी बलरामपुर, शिवकुमार कौशल, सर्वजीत शास्त्री, श्यामबिहारी श्रीवास्तव, ओंकार नाथ शास्त्री, कृष्णकुमार आर्य, रामलखन आर्य बरघाट, सुभाष आर्य ब्लिसूरी, श्रीमती गिरजा त्रिपाठी देवरिया, श्री रामकुंवर चौहान मनकापुर, गोण्डा, अन्य सभी क्षेत्रीय आर्य समाजों के कार्यकर्ता व पदाधिकारीगण उपस्थित रहे।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
के तत्वावधान में
बृहद् योग शिविर का आयोजन दिनांक ०८, ०९, १०, ११ जून २०१८
तदनुसार शुक्रवार, शनिवार, रविवार, सोमवार तक
स्थान- महात्मानारायण स्वामी आश्रम, रामगढ़ तल्ला, नैनीताल (उ०ख०)
प्रिय आर्य बन्धुओं/बहिनों,
उपरोक्त शिविर में आप सादर आमंत्रित हैं। कृपया इस शिविर में उपस्थित होकर योग, भजन एवं प्रचन का लाभ उठायें।

डा. धीरज सिंह — प्रधान
अरविन्द कुमार — कोषाध्यक्ष
धर्मेश्वरानन्द सरस्वती — मंत्री

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

पूर्व मुख्यमंत्रियों का सरकारी बगलों पर मोह!

उच्चतम न्यायालय द्वारा उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्रियों को खैरात में सरकारी बगलें आवंटित किये जाने सम्बन्धी कानून को असंवैधानिक करार दे दिया है। सर्वोच्च न्यायालय का यह फैसला न ही सिर्फ ऐतिहासिक है बल्कि राजनीतिज्ञों के लिए एक करारा सबक भी है। इस फैसले ने संविधान में समानता के अधिकार को एक बार फिर से रेखांकित करने का काम किया है। सच बात तो यह है कि दो वर्ष पूर्व ही जनहित याचिका का निपटारा करते हुए उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्रियों को सरकारी बंगलें आवंटित करने का प्राविधान रद्द कर दिया था। पर तत्कालीन सपा सकार के मुखिया अखिलेश यादव की पहल पर प्रदेश के मंत्रियों के वेतन भत्ते और अन्य सम्बन्धित अधिनियम में संशोधन कर दिया गया था।

जिससे उस समय पूर्व मुख्यमंत्री एन.डी. तिवारी, राजनाथ सिंह, मुलायम सिंह यादव, कल्याण सिंह और मायावती जैसे पूर्व मुख्यमंत्री जीवन भर सरकारी बंगला पाने के वाजिब हकदार बन गये थे। अब सुप्रीम कोर्ट ने दिये गये अपने ताजे फैसले में स्पष्ट कर दिया है कि अपने पद से हटने के बाद, सुबे का मुख्यमंत्री भी समान व्यक्ति की श्रेणी में आ जाता है। ऐसी दशा में उसे सरकारी बंगला आवंटित किया जाना धारा १४ का उल्लंघन होगा।

इस प्राविधान में संविधान के तहत देश के सभी नगरिकों को समानता का अधिकार प्रदत्त किया गया है। वास्तविकता तो यह है कि सिर्फ पूर्व मुख्यमंत्री ही नहीं बल्कि मंत्री विधायक और सांसद तक अपने पद से हटने के बाद सरकारी बंगला नहीं खाली करना चाहते हैं। दरसल मामला सिर्फ सरकारी सुविधा हासिल करने का नहीं, बल्कि यह राजनीतिज्ञों के लिए रसूख का विषय भी बन गया है। इसके जरिये नेता आम जन में अपना दमखम दिखाने की इच्छा रखता है।

इस मामले में देश के सभी तकरीबन राजनीतिक दलों की विचार धारा एक जैसी ही पायी जाती है। उदाहरण के तौर पर अप्रैल २०१७ में राजस्थान की वसुन्धरा सरकार ने विधान सभा में एक संशोधन अधिनियम पारित कराया था, जिसमें ५ वर्ष का कार्यकाल पूरा करने वाले पूर्व मुख्यमंत्रियों को न सिर्फ सरकारी बंगला अपितु सरकारी कार, सरकारी फोन, और अन्य तरह की सभी सुविधायें उपलब्ध कारने का प्राविधान किया गया था।

एक लोकतांत्रिक देश में इस तरह से भेद कैसे किया जा सकता है। कोई व्यक्ति किसी विशिष्ट संवैधानिक पद पर रहा है, बल्कि उच्च पदों पर रहे राजनेताओं से यह उम्मीद की जानी चाहिए कि, वह आदर्श प्रस्तुत करें। सुप्रीम कोर्ट का ताजा फैसला भले ही उत्तर प्रदेश के संदर्भ में आया है। पर इसका प्रभाव पूरे देश पर आने वाले समय में पड़ेगा। देश की जनता अब यह भी गौर कर रही है कि क्या उच्चतम न्यायालय का जो ताजा फैसला आया है। क्या उसकी परिधि में देश के पूर्व राष्ट्रपति, पूर्व उपराष्ट्रपति और पूर्व प्रधानमंत्री भी आते हैं कि नहीं।

भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में समाज सेवा के नाम पर राजनीति में जिस तरह से गंदगी पैदा हुई है। वह निश्चित ही हमारे समाज और देश के लिए गम्भीर चिन्ता का विषय है। इस पर हर किसी को आत्ममंथन करने की जरूरत है। अगर हमने ऐसा नहीं किया तो राजनीति के नाम पर देश की भोली–भाली जनता को कब तक मूर्ख बनाया जाता रहेगा। कल्पना कीजिए कि आज उच्चतम न्यायालय को नागरिकों के आम अधिकार के लिए फैसले सुनाने पड़ रहे हैं। उक्त फैसला कोई पहला नहीं है। इस तरह के न जाने कितनी बार कोर्ट माननीयों की मनमानी पर अंकुश लगाने के लिए कदम उठा चुकी है। आशा है कि आने वाले दिनों में राजनेताओं के रवैये में सुधार होगा।

— सम्पादक

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ षष्ठ समुल्लासारम्भः

अथ राजधर्मान् वक्ष्यामः

इस प्रकार विजय करने वाले सभापति के राज्य में जो परिपन्थी अर्थात् डाकू लुटेरे हों उनको (साम) मिला लेना (दाम) कुछ देकर (भेद) फोड़ तोड़ करके वश में करे।।७।। और इनसे वश में हों तो अतिकठिन दण्ड से वश में करे।।८।।

जैसे धान्य का निकालने वाला छिलकों को अलग कर धान्य की रक्षा करता अर्थात् टूटने नहीं देता है वैसे राजा डाकू चोरों को मारे और राज्य की रक्षा करे।।९।।

जो राजा मोह से, अविचार से अपने राज्य को दुर्बल करता है, वह राज्य और अपने बन्धुसहित जीवन से पूर्व ही नष्ट भ्रष्ट हो जाता है।। १०।।

जैसे प्राणियों के प्राण शरीरों में कृशित करने से क्षीण हो जाते हैं वैसे ही प्रजाओं को दुर्बल करने से राजाओं के प्राण अर्थात् बलादि बन्धुसहित नष्ट हो जाते हैं।।११।।

इसलिये राजा और राजसभा राजकार्य की सिद्धि के लिए ऐसा प्रयत्न करें कि जिससे राजकार्य यथावत् सिद्ध हों। जो राजा राज्यपालन में सब प्रकार तत्पर रहता है उसको सुख सदा बढ़ता है।।१२।।

इसलिए दो, तीन, पांच और सौ ग्रामों के बीच में राजव्यवस्था रक्खें जिस में यथायोग्य भृत्य अर्थात् कामदार आदि राजपुरूषों को रखकर सब राज्य के कार्यों का पूर्ण करे।।१३।।

एक-एक ग्राम में एक-एक प्रधान पुरुष रक्खें उन्हीं दश ग्रामों के ऊपर दूसरा, उन्हीं बीश ग्रामों के ऊपर पांचवा पुरुष रक्खे।। अर्थात् जैसे आजकल एक ग्राम में पटवारी, उन्हीं दश ग्रामों में एक थाना और दो थानों पर एक बड़ा थाना और उन पांच थानों पर एक तहसील और दश तहसीलों पर एक जिला बड़ा थाना और उन पांच थानों पर एक तहसील और दश तहसीलों पर एक जिला नियत किया है यह वही अपने मनु आदि धर्मशास्त्र से राजनीति का प्रकार लिया है। ।१४।।

इसी प्रकार प्रबन्ध करे और आज्ञा देवे कि वह एक-एक ग्रामों का पति ग्रामों में नित्यप्रति जो-जो उत्पन्न हों उन-उन को गुप्तता से दश ग्राम के पति को विदित कर दे और वह दश ग्रामाधिपति उसी प्रकार बीस ग्राम के स्वामी को दश ग्रामों का वर्त्तमान नित्यप्रति जना देवे।।१५।।

और बीस ग्रामों का अधिपति बीस ग्रामों के वर्तमान शतग्रामधिपति को नित्यप्रति निवेदन करें। वैसे सौ-सौ ग्रामों के पति आप सहस्त्राधिपति अर्थात् हजार ग्रामों के स्वामी को सौ-सौ ग्रामों के वर्तमान प्रतिदिन जनाया करें। (और बीस-बीस ग्राम के पांच अधिपति सौ-सौ ग्राम के अध्यक्ष को) और वे सहस्त्र-सहस्त्र के दश अधिपति दशसहस्त्र के अधिपति को और वे दश-दश हजार के दश अधिपति लक्षग्रामों की राजसभा को प्रतिदिन का वर्तमान जनाया करें। और वे सब राजसभा महाराजसभा अर्थात् सार्वभौमचक्रवर्ति महाराज सभा में सब भूगोल का वर्त्तमान जनाया करें।।१६।।

और एक-एक दश-दशसहस्त्र ग्रामों पर दो सभापति वैसे करें जिन में एक राजसभा में और दूसारा अध्यक्ष आलस्य छोड़कर सब न्यायाधीशादि राजपुरूषों के कामों को सदा घूमकर देखते रहैं।।१७।।

बड़े-बड़े नगरों में एक-एक विचार करने वाली सभा का सुन्दर उच्च और विशाल जैसा कि चन्द्रमा है वैसा एक-एक घर बनावें, उसमें बड़े-बड़े विद्यावृद्ध कि जिन्होंने विद्या से सब प्रकार की परीक्षा की हो वे बैठकर विचार किया करें। जिन नियमों से राजा और प्रजा की उन्नति हो वैसे-वैसे नियम और विद्या प्रकाशित किया करें।।१८।।

जो नित्य घूमनेवाला सभापति हो उसके आधीन सब गुप्तचर अर्थात् दूतों को रक्खे। जो राजपुरूष और प्रजापुरूषों के साथ नित्य सम्बन्ध रखते हों और वे भिन्न-भिन्न जाति के रहैं, उन से सब राज और राजपुरूषों के सब दोष और गुण गुप्तरीति से जाना करे, जिनका अपराध हो उनको दण्ड और जिनका गुण हो उनकी प्रतिष्ठा सदा किया करे।।१९।।

राजा जिनको प्रजा की रक्षा का अधिकार देवे वे धार्मिक सुपरीक्षित विद्वान् कुलीन हों उनके आधीन प्रायः शठ और परपदार्थ हरने वाले चोर डाकुओं को भी नौकर रख के उनको दुष्ट कर्म से बचाने के लिए राजा के नौकर करके उन्हीं रक्षा करने वाले विद्वानों के स्वाधीन करके उनसे इस प्रजा की रक्षा यथावत् करे।।२०।।

जो राजपुरूष अन्याय से वादी प्रतिवादी से गुप्त धन लेके पक्षपात से अन्याय करे उन का सर्वस्वहरण करके यथायोग्य दण्ड देकर ऐसे देश में रक्खें कि जहां से पुनः लौटकर न आ सके क्योंकि यदि उस को दण्ड न दिया जाय तो उसको देख के अन्य राजपुरूष भी ऐसे दुष्ट काम करें और दण्ड दिया जाय तो बचे रहैं।।२१।। परन्तु जितने से उन राजपुरूषों का योगक्षेम भलीभांति हो और वे भलीभांति धनाढ्य भी हों उतना धन वा भूमि राज की ओर से मासिक वा वार्षिक अथवा एक बार मिला करे और जो वृद्ध हों उनको भी आधा मिला करे परन्तु यह ध्यान में रक्खें कि जब तक ये जियें तब तक वह जीविका बनी रहै पश्चात् नहीं, परन्तु इन के सन्तानों का सत्कार व नौकरी उन के गुण के अनुसार अवश्य देवे और जिस के बालक जब तक समर्थ हों उनकी स्त्री जीती हो तो उन सब के निर्वाहार्थ राज्य की ओर से यथायोग्य धन मिला करे। परन्तु जो उसकी स्त्री वा लड़के कुमार्गी हो जायें तो कुछ भी न मिले, ऐसी नीति राजा बराबर रक्खे।।

क्रमशः

धरोहर

गुरुकुलों के कुलपिताः (श्री कृष्णलाल जी सिक्का)

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ०प्र०, लखनऊ
संचालक–गुरूकुल पूठ, हापुड़
मो० ६८३७४०२१६२

गुरूकुल गौतम नगर, नई दिल्ली का चतुर्वेद पारायण यज्ञ चल रहा था। अचानक एक कारगाड़ी आकर रूकी और एक सज्जन उतरकर आचार्य हरिदेव जी के कक्ष की ओर चले गये। आपको देख सहसा मन में एक भाव पैदा हुआ कोई सरकारी आफिसर है। मोटी–मोटी आंखे, गंभीर मुद्रा लेकिन चेहरे पर सौम्यता, लम्बा शरीर, आधुनिक वेशभूषा से सुशोभित आंखों पर चश्मा देखकर प्रत्येक व्यक्ति प्रभावित होता था। मैं भी उनमें से एक हूँ। आपको देखते ही कक्ष में प्रवेश करते हुए को सभी ने श्रद्धा से खड़े होकर अभिवादन किया और यथास्थान बैठ जाने के उपरांत मन में जिज्ञासा बनी रही कि ये कोई अधिकारी है अथवा मंत्री है। पानी लेने के बाद कार्यक्रम के बारे में जब पूछा तो आचार्य श्री हरिदेव जी ने कहा आदरणीय सिक्का जी अध्यक्षता तो आपको ही करनी है और जो भी वक्ता हैं वे बोलते रहेंगे तथा अन्य सन्यासी आ रहे हैं तब मुझे स्मरण आया कि आदरणीय सिक्का जी वहीं है जो इस गुरूकुल के नहीं अपितु इस न्यास द्वारा संचालित एवं इस संस्था से संबंधित सभी गुरूकुलों के आप कुलपिता हैं। बड़े उदारमना हैं, याज्ञिक परिवार है, दैनिक यज्ञ होता है और अपना जंगपुरा विस्तार वाली पूरी कोठी स्वामी श्रद्धानन्द जी की तरह वेद प्रचार एवं यज्ञ के लिए समर्पित कर दी है। मुझे आचार्य श्री ने पहले जो बताया था वह सारा दृश्य आंखों के समाने आ गया और मैं उस भव्य मूर्ति को देखता रहा। कैसी सौम्यता प्रदान की है प्रभु ने। अहंकार शून्यता के जीवन से इन्होंने कैसा सुन्दर सोने पर सुहागे जैसा रूप देखकर आत्मीयता के भाव जागृत हो गए और देखकर लग रहा था कि पिछले जन्म के कोई त्यागी, तपस्वी सन्त हैं। किसी भी प्रकार की चंचलता, चालाकी, अभिमान दिखाई नहीं देता। परमात्मा के सद्गुणों को एक ही शरीर में संग्रहीत कर दिया है। आचार्य श्री के भी पिछले जन्म के अच्छे संस्कारों का सुपरिणाम था जो ऐसे देवतुल्य कुलपिता के सानिध्य में रहकर वेद प्रचार एवं यज्ञों की परम्परा का संचालन कर उसके लिए जीवनदानी, वेदपाठी, ब्रह्मचारी, विद्वान तैयार कर रहे हैं।

यह प्रथम परिचय था। सम्मेलन में साथ–साथ रहे। मैंने भी अपना परिचय देना चाहा, तो मेरे भावों को समझकर आचार्य श्री हरिदेव जी ने स्वयं ही बताना प्रारम्भ कर दिया कि ये हमारे छोटे भ्राता जी है और उ०प्र० में गाजियाबाद जिले में गंगा किनारे गढ़मुक्तेश्वर के पास अपना एक और गुरूकुल पूठ है, उसमें भी आपको चलना है। तो बोले सुना तो नाम बहुत दिनों से है और आपको मैं काफी समय से जानता हूँ पर कभी बातें नहीं हुई और आचार्य जी ने भी नहीं बताया कि पूठ गुरूकुल भी हमारा है। तब मैंने कहा कि ये ही तो उसके प्रबंधक है, मालिक है। सारी व्यवस्था ये ही तो करते हैं, तो बड़े प्रसन्न हुए और कहने लगे कि फिर तो जरूर चलना है। एक संस्था हमारी उ०प्र० में और है, उसे आप जानते हैं। मैंने बताया कि जानता हूं। पूज्या माता जी सिक्का जी का आशीर्वाद और आपका स्नेह उस संस्था को बढ़ा रहा है। फिर वे चलने लगे तो मैंने फिर याद दिलाया तो बोले कि भाई यह सब आचार्य जी पर निर्भर है। जब ये चाहेंगे हम तभी चल पड़ेंगे, मिलने पर यही कहते पाया कि आचार्य जी क्षमा करना अभी प्रभु की इच्छा से संयोग नहीं बन पा रहा है मौका लगेगा तो जरूर चलेंगे।

इस बार भी देहरादून में जून में ऐसा ही कह रहे थे और आचार्य जी से कहा कि इस बार जब भी चलो मुझे साथ लेकर जरूर चलना। लेकिन जब पत्र पत्रिकाओं में पढ़ा कि वे तो चले गये, वृन्दावन की यात्रा उनकी भावनाओं की और जीवन की अंतिम यात्रा बन गई और ऐसे पथ पर शूरवीर जाते हैं, जिस पथ पर योगीजन योग यात्रा से अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं ऐसे ही सिक्का जी ने अपनी यात्रा का भी सिक्का सभी आत्मीय एवं आर्यजनों, विद्वजनों के हृदय पर जमा दिया कि वे कितने सरल व्यक्तित्व के धनी थे, कितने सादे थे कितने पवित्र भावों के मालिक थे जो वृन्दावन की ओर यात्रा करने का अन्त में उन्हें सौभाग्य प्राप्त हो गया। यदि पौराणिक विचारधारा के होते तो प्रसिद्धि हो जाती कि कृष्ण भगवान के दरबार में जाने के लिए प्रभु ने ऐसी व्यवस्था की है। लेकिन हम आर्य विचारों वाले यह तो कह सकते हैं कि गुरूवर प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द जी की कुटिया से निकल कर जैसी भावना संकल्प गुरूवर महर्षि दयानन्द जी ने लिया था कि मैं वेदों का प्रचार प्रसार करूंगा, संभवतः ऐसे ही संकल्प लेने वहां जाने का मन बनाया हो और बचे जीवन कोइधर आकर वेद प्रचार के लिए समर्पित करना चाहते हों। वैसे इस जीवन में वे दक्षिण दिल्ली प्रचार मण्डल के अध्यक्ष निरन्तर पिछले कई वर्षों से चल रहे थे और जहां भी कार्यक्रम होता जाते थे और पूरा सहयोग करते थे अर्थात् तन–मन–धन से वेद प्रचार के लिए सर्वात्मना रूपेण समर्पित थे। उनके जीवन में धर्म साक्षात रूप में प्रतिष्ठित हो गया था। रोम–रोम में महर्षि दयानन्द प्रभाव स्थापित हो गया था। श्रीमती माता कान्ता सिक्का जी का सहयोग धर्मपत्नी के रूप में मिलना उनके लिए सोने पे सुहागा का काम था। आप कभी भी माता जी के पास जाये तो लक्ष्मी स्वरूपा बनकर सदैव दान करती हैं। यज्ञ करके प्रतिनिदन अपनी आत्मा को बलवती बनाकर उसके संगठन को सुदृढ़ करती रहती है। आर्यमित्र जी एवं पुरूषोत्तम जी जैसे सहयोगी आत्मीयता से संगठन में सक्रिय सहयोगी हैं, यह उनका सौभाग्य है।

आपके सुपुत्र सदैव आज्ञानुवर्ती होकर आपके प्रत्येक कार्य को आगे बढ़ाने में प्रसन्न मन से अहर्निश लगे रहते हैं। ऐसे सुपुत्र परमात्मा सभी आर्यों को प्रदान करें, जो अपने पिताजी के सम्मान की सुरक्षा में सदैव प्रयत्नशील रहते हैं। पूज्या माता जी का सौम्य स्वभाव एवं धार्मिक आस्था यज्ञों के प्रति निष्ठा दान के प्रति प्रसन्नता एवं सदैव गंभीर भाव से अपनी आभा से सभी को प्रभावित करती है। ऐसे धार्मिक जीवन में यज्ञों का ही प्रभाव है जो इतने भयंकर कष्ट में भी पूर्ण संयम एवं सहनशीलता का परिचय दिया है। महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि 'ईश्वर की स्तुति प्रार्थना, उपासना करने से आत्मा की शक्ति का विकास होता है और बड़े से बड़े दुख को भी सहन करने की क्षमता प्राप्त हो जाती है। उसका साक्षात् प्रमाण माता सिक्का जी के जीवन में देखने को मिला है। गुरूकुल गौतमनगर हो अथवा मंझावली या देहरादून सभी जगह जाकर माता सिक्का जी ने श्री सिक्का जी के नाम को यशस्वी बनाने के लिए दान के रूप में भरपूर सहयोग दिया है।

आपका जन्म १९३३ ई० में झंग यधियाना ग्राम में (जो इस समय पाकिस्तान में आता है) हुआ था आपके पिता जी का नाम श्री किराया लाल जी सिक्का था। आपकी पूज्या माता जी का नाम पार्वती देवी था। आपने प्रारम्भिक शिक्षा ग्राम में ही प्राप्त की। देश का विभाजन का दुख देखना पड़ा और आप परिवार के साथ दिल्ली में ही आ गये। दरियागंज स्थित डी.ए.वी. से पढ़कर उच्च शिक्षा प्राप्त करके नौकरी में मन लगाया। वहां पर जब सिक्का जी का मन नहीं लगा तो अपने व्यापार कार्य में संलग्न हुए और पूर्ण सफलता प्राप्त करते हुए १९८५ में श्रीमती कान्ता सिक्का जी के साथ रहने का संकल्प विवाह के रूप में ले लिया। माता जी का परिवार सच्चा वैदिक धर्मी था। उसी के सारे संस्कार माता जी में आज भी सुरक्षित है। उसी का प्रभाव था जो सिक्का जी जैसे व्यक्ति व्यापारी होते हुए भी पूर्णरूपेण धार्मिक हो गए तथा आपने जंगपुरा विस्तार वाले मकान को यज्ञधाम के रूप में स्थापित कर जनसेवा के हितार्थ धर्माथ औषधालय की भी व्यवस्था कर दी थी। ऐसे थे हमारे कुलपिता श्री कृष्णलाल सिक्का जी जिन्होंने गुरूकुल विद्यालय एवं यज्ञशाला के लिए दान देने में कभी किसी को भी निराश नहीं किया। लेकिन ६ जुलाई २००६ को हम सभी को निराश कर दिया और यशः शरीर की रक्षा करते हुए स्थूल शरीर से सूक्ष्म शरीर वायुलोक में विलीन हो गया। हम सभी कुलवासी, आर्यवीर दल के आर्यवीर, आर्यसमाजों के अधिकारी तथा परिवारों के आत्मीय सदस्यों को कर्मयोगी कर्म करने की प्रेरणा देते हुए आपका प्रत्येक श्वांस सार्थक हो गया। ऐसे माननीय कर्मयोगी के लिए हम सभी अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं।

कज्जल दर्पण–उज्ज्वल द्रश्य

– देव नारायण भारद्वाज

व्रज के एक दार्शनिक सन्त बहुत प्रसिद्ध थे। बड़े–बड़े राजे–महाराजे, श्रेष्ठीगण उनके दर्शन व आशीष वचन के लिए चक्कर लगाते रहते थे। अभी वे स्नानादि से निव्रत होकर अपने उपासना के आसन पर बैठने ही जा रहे थे, कि उन्होंने अपनी बेटी को आवाज लगाई बेटी! मेरा दर्पण लेकर आओ। सन्त एक विशेष आकृति बनाकर चन्दन का तिलक अपने मस्तक पर लगाते थे। बेटी जो दर्पण लेकर आई–वह पानी से भरा हुआ एक कठौता था। कठौता लकड़ी का बना एक तसला समझ लीजिए। सन्त जी ने पानी के स्थिर होने पर अपने माथे पर तिलक लगाना आरम्भ किया ही था, कि एक राजा उनके दर्शनों के लिए उपस्थित हो गये। उस दिन तो संक्षिप्त दर्शन के बाद राजा जी लौट गये, दूसरे दिन वे फिर आये, और उनको सोने–चाँदी की आरशी भेंट की। सन्त जी ने उनकी आरशी को वापस करते हुए निर्लोभी शब्दों में कह दिया– मैं अपनी कुटिया में व्यर्थ वस्तुओं का भण्डार बनाना पसन्द नहीं करता, और कृपया आप भी यहां से हट जाइए। मेरी धूप रूक रही है। एक कोई दूसरे दार्शनिक सन्त थे, उन्होंने आरशी ही नहीं एक बड़े दर्पण की भेंट को स्वीकार कर लिया था, आश्रम की प्रमुख दीवाल पर टांग दिया था। वे सन्त तो महान थे प्रतिष्ठित थे, और नित्य उपासना से पूर्व दर्पण में स्वयं को देखा करते थे। वास्तव में बहुत ही कुरूप थे। उनके द्वारा दर्पण में मुख देखते समय एक शिष्य ने पूंछ लिया *गुरूजी! क्या आप इतने सुन्दर हैं जो दर्पण में स्वयं* को झांका करते हैं? उन्होंने उत्तर दिया मैं निःसन्देह मैं कुरूप हूं इसीलिए मैं दर्पण में झांक कर अपनी कुरूपता को मान करते हुए अपने मन, वचन, कर्म से ऐसा व्यवहार करता हूं, जिससे मेरी कुरूपता ढक जाये और आचरण की सुन्दरता छा जाये। शिष्य ने फिर पूंछा तो फिर जो लोग सुन्दर हैं उन्हें दर्पण देखने की आवश्यकता नहीं है क्या? गुरू जी ने उत्तर दिया– ''उन्हें तो दर्पण देखने की और भी अधिक आवश्यकता है, जिससे अपनी सुन्दरता को बनाये रखने के लिए, उसमें चार चांद लगाने के लिए सुन्दर कार्य व्यवहार करते रहें, और कोई निन्दनीय कार्य न करें, जिससे उनकी सुन्दरता में ह्रास नहीं विकास होता रहे। कोई भी क्यों न हो, जो उपनिषद, कथाओं को सुन लेते हैं, उनके जीवन में (उप+नि+षद) असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतं गमय'' का शतपथ प्रस्तुत हो जाता है।

बादशाह औरंगजेब की पुत्री जे बुन्निशा ने अपने पित्य दाराशिकोह से उपनिषद् की कथाओं को सुनकर ''दर्पण'' के अर्थ को समझ लिया था– (दर्प+न) किसी भी प्रकार के दर्प–अहंकार को न करना। तभी तो भेंट में मिला चीनी आइना या दर्पण के यकायक दासी के द्वारा टूट जाने पर उसके डर को, प्रताड़ना को उसको हताशा के वाक्य के साथ अपनी शुभाषा के वाक्य को जोड़कर भयमुक्त कर दिया था।

अज कजा आइना ये चीना शिकस्त।
खूब शुद सामाने खुद बीनी शिकस्त।।

कोई कितना ही करे, दर्पण आज की अपरिहार्य वस्तु बन गया है, जो मोबाइल से बढ़ते–बढ़ते सेल्फी का स्वयं चित्रण बन गया है। इसकी दशा–दुर्दशा के सचित्र समाचार सर्वत्र दिखाई सुनाई देते हैं, जो स्वमित्रा तो कम स्वहन्ता के रूप में अधिक प्रदर्शित होते हैं। लेखक के पास भी एक ऐसा दर्पण रहा है, जो अपनी स्वर्णजयन्ती मनाते हुए विदा लेने की स्थित में आ गया है। उसे मैं कज्जल दर्पण कहता रहा हूँ, जो मुझे सदैव उज्ज्वल दृश्य दिखाता रहा है। कालेज के प्रवक्ता पद को छोड़कर १९६० में जब राजकीय सेवा में योगदान किया था, तब चतुर्थ श्रेणी से लेकर प्रथम श्रेणी तक कर्मचारी/अधिकारियों के वेतन कम होते थे, किन्तु चरित्र के बल पर निर्वाह अच्छी प्रकार से हो जाता था। प्रारम्भिक स्तर पर मैं मुख्यालय लखनऊ में नियुक्त था। खादी वस्त्रों के प्रचार के लिए सभी को गांधी आश्रम से हुण्डियां दी गईं थी, जिनके मूल्य के बाराबर वे खादी के वस्त्र क्रय कर सकते थे, और मूल्य किश्तों के अनुसार कई महीनों से चुका सकते थे। मैं अपनी हुण्डी लेकर गांधी आश्रम हजरतगंज मैं पहुंचा, तो उस मूल्य में मुझे अपनी पसन्द का कोई कपड़ा नहीं मिला। अन्ततः विक्रय सहायक की पसन्द से ही मूल्य भर का वस्त्र क्रय कर लिया। वह वस्त्र एक दम गहरे काले रंग का ऊँनी वस्त्र क्या, भेड़–बकरी के बालों से बना अत्यन्त खुरदरा था। अब लखनऊ से प्रोन्नति पर मैं मेरठ आ गया।

मेरठ में वस्त्र शिल्पियों को मन पसन्द कुर्ता बनाने के लिए दिया। कई दिन रखकर उन्होंने वापस कर दिया। बोले जो आप चाहते थे वो मैं नहीं बना सकता। विवाह हुए कुछ ही माह हुए थे। श्रीमती जी से आग्रह किया, उन्होंने उस वस्त्र में मेरी अभिलाषा भी पूरी कर दी, और कनिष्ठ अनुज के लिए एक सदरी भी बना दी। उस वस्त्र का स्वरूप ऐसा बन पड़ा था कि उसे कोट–कुर्ता, कमीज किसी रूप में पहन सकते थे। खुरदरा वह था ही, दिगम्बर रहने वाले सन्त जन भी जब उसे देखते थे, तो कह उठते थे, कि यदि मैं कभी वस्त्र धारण करूंगा, तो शीत ऋतु में ऐसा ही कठोर, कण्टक पूर्ण कज्जल वस्त्र ही बनवाऊँगा। उसका काला रंग मुझे उसी प्रकार भूले–बिसरे चित्र दिखाता रहता था, जिस प्रकार किसी सिनेमाघर के अन्धेरे हाल में पर्दे पर उज्ज्वल द्रश्य दिखाई देते हैं। जैसे–जैसे मेरे साथ–साथ उस वस्त्र की आयु बढ़ती जाती रही है, वैसे–वैसे पुरातन दृश्य और अधिक उज्ज्वल होते जाते रहे हैं। उसके निरन्तर कटते जाने पर भी मैंने उसका साथ नहीं छोड़ा। जिस वस्त्र को कभी हम लवादा, कभी कवच नाम से बुलाते थे, धीरे–धीरे वह विदीर्ण होने लगा। बाहें कटीं तो बन्डी, बन्डी फटी तो ऊपरी जाकेट, वह भी फटी तो शाल–पट्टिका, और इसके फटने पर भी सन्ध्योपसना के आसन के रूप में हमारा साथ देता रहा है। इस ऊनी वस्त्र की पवित्रता की पात्रता चिर स्मृति की प्रेरणा–प्रसादी की उभरती हुई दृश्यावली चल चित्रों से भी अधिक चमकदार हैं। आज के युग में वे दृश्य जीवन–व्यवहार में दुर्लभ हैं। वे इस कज्जल दर्पण से स्पष्ट स्मरण पटल पर उभर आते हैं। वे देखिए अमौसी हवाई अड्डे पर पुत्री इन्दिरा गांधी के साथ प्रथम प्रधान मंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू उतर रहे हैं। पूरा महानगर उनके स्वागत में उमड़ पड़ा है। उनके साथ सुरक्षा गार्ड़ो का कोई भी दल नहीं है। खुली जीप में हाथ हिला कर स्वागत स्वीकार करते चलते हैं। फूल मालाओं को हंसते हुए बच्चों की ओर फेंक देते हैं। विशाल सभाओं में मञ्च पर उनके साथ लोकप्रिय नेतागण होते थे, सुरक्षा गार्डों की भीड़ नहीं। लखनऊ विश्वविद्यालय में भाषण देकर निकलते समय खुली जीप में युवा छात्र उनको स्पर्श करके देखना चाहते थे। नेहरू जी जीप पर इधर से उधर अथवा इधर से उधर होते रहते थे, और भीड़ में जीप चींटी की भांति रेगती हुई आगे बढ़ती थी। एक नेहरू जी ही क्या मान्यवर मुरार जी देशाई, मुख्यमंत्री चन्द्रभानु गुप्त, श्रीमती सुचेता कृपलानी सभी बिना सुरक्षा गार्ड़ों के घेरे से बाहर रहते थे। हजरतगंज में मन्त्रीगण, विधायक स्वतन्त्र रूप से टहलते मिल जाते थे। यहां के राज्य सूचना केन्द्र पर निरन्तर रवीन्द्र संगीत की ध्वनि गुंजरित होती थी, तथा उच्च स्तरीय नेतृत्व अगल–बलग बैठ कर चर्चा, व्यस्त रहता था।

सिटीबस, टैक्सी, टैम्पो तो चलते थे, किन्तु सर्वाधिक संख्या इक्का व तांगों की रहती थी। तांगा चालक स्वयं को नबाबों का वंशज बताकर चार आने–आठ आने (चौथाई या आधा रूपया) की पेंशन पर गर्व करते थे। एक वंशज तो ऐसे थे, जो नित्य सन्ध्या को शानदार रंग बिरंगें वस्त्र व टोपी धारण कर ऊपर से रंगीन छतरी तानकर हजरतगंज में भ्रमण करने आते थे। जलपान गृह एवं भोजनालयों के बाहर आज भी भांति टेढ़ी निगाह से देखने वाले सुरक्षा गार्ड नहीं होते थे। प्रत्युत सजी धजी वेशभूषा में कोई कर्मचारी रहता था, जो प्रवेश करने वाले व्यक्तियों को सलूट से स्वागत करता था। भीतर जाकर चार अपने (पच्चीस पैसे) को दोसा खाने वाले को भी यह सलूट–स्वागत मिल जाता था। लाल बत्ती चौराहे के बड़े काफी हाउस में सायंकाल को प्रसिद्ध साहित्यकार भगवती चरण वर्मा, यशपाल, इलाचन्द्र जोशी आदि सभी के सहज ही दर्शन सुलभ हो जाते थे। उन्हीं दिनों रूस के देश के प्रथम अन्तरिक्ष यात्री यूरी गागरिन को भारत आमन्त्रित किया गया था। कुछ भारतीय अधिकारियों के साथ वे खुली जीव में बैठ कर अधिकतर खड़े होकर लोगों का स्वागत हंसते–मुस्कुराते हुए स्वीकार कर रहे थे।

यह देखिए हजरतगंज के लालबत्ती वाले बड़े चतुष्पथ के समीप बापू जी की प्रतिमा है, स्टेडियम के समीप बेगम हजरत महल पार्क है, अमीनाबाद का हनुमान मन्दिर का पार्क, या अमीनाबाद पार्क है। यहां बिना किसी गार्ड के डा० राम मनोहर लोहिया, आचार्य जे.पी.कृपलानी आदि–आदि की सभायें बिना रोक–टोक के चलती रहती थी। अमीनाबाद में ही एक बड़ा पुस्तक बाजार था, जिसमें दुकानों की भरमार थी। आकर्षक का केन्द्र एक पार्श्व में स्थित पुरानी पुस्तकों की बड़ी–बड़ी दुकाने थीं। जब मैं लखनऊ से बिदा होने लगा, तो उन पुरानी पुस्तक–दुकानों का भ्रमण किया। एक हिन्दी शब्दकोष मात्र बारह रूपये में क्रय करके लाया, जिसने मेरा बहुत साथ दिया। उनको, जिन्होंने उसे उस दुकान पर पहुंचाया–मैं सम्मान पूर्वक स्मरण करता हूँ, क्योंकि उन्हीं की कृपा से मैं अपने शब्द ज्ञान में वृद्धि

शेष पृष्ठ ५ पर

पृष्ठ ४ का शेष

कज्जल दर्पण...

कर सका।

हमारा यह कपड़े का कज्जल दर्पण चित्र पटल की भांति न जाने कितने चल चित्रों को समेटे हैं, उसका द्रश्य–दर्शन सदैव चलता ही रहेगा। लखनऊ के राज्य स्तरीय अनुभाग में मुझे क्लब मंत्री बनाया। आने वाली पत्र–पत्रिकायें कार्यालय के लोग तो कम पढ़ते थे, किन्तु न्यू हैदराबाद के स्वच्छ–शुद्ध प्रभाग में मैं रहता था, वह मिश्रा–शुक्लाओं की बस्ती थी,जो क्लब कार्यालय में नहीं लग पाता था, वह हमारे छोटे से आवास के शान्त सुरक्षित द्वार पर चलता था। युवा कम सेवा निवृत्त जन साथ–साथ बैठकर हास्य–विनोद पूर्ण ज्ञान वर्धन करते थे, और मेरा मार्ग दर्शन भी होता रहता था। मेरी नई–नेवली नव वधू के वहां पहुंचने पर शुक्ला जी एवं उनकी धर्म पत्नी, जिन्हें हम दद्दा जी एव दिद्दी जी कहते थे, ने हम लोगों को अपने पास ही बुला लिया था। उनके अपार प्रेमाधार का मैं भूरिशः आभार व्यक्त करता हूं।

इस वस्त्रीरूपी कज्जल दर्पण का एक–एक रेखा अब मुझसे विदा होने वाला है, किन्तु उसका उज्जवल द्रश्य आजीवन मुझसे पृथक नहीं हो सकता है। यह मेरा कोई तथ्य हीन काल्पनिक कथन नहीं है, प्रत्युत यह वैदिक विवाह दर्शन का सार है। वैवाहिक यज्ञ–श्रंखला प्रारम्भ करने से पूर्व मण्डप में ही वट पक्ष की ओर से कन्या एवं वर दोनों को ही, गृह की देवियों, द्वारा तैयार किये हुए चुनरी एवं दुपट्टा ओढ़ायें जाते हैं। इन सूक्ष्म वस्त्रों को बुनने या तैयार करते समय गृह देवियों की भावनायें भी गुथती जाती हैं, जो नवदम्पती के युगल जीवन में ही नहीं, वर–कन्या दोनों पक्षों के समग्र पारिवारिक जीवन हेतु मंगलकारिणी होती है। यथा–

ओं जरां गच्छ परिधत्स्व वासो भवाकृष्टीनाम भिशस्ति पावा।

शतं च जीव शरदः सुवर्चा रपिं च पुत्रानुसंव्ययस्वा युष्मतीद परिधत्स्वः वासाः।।

ओं यशसा मा द्यावापृथिवी यशसेन्द्रा बृहस्पती।

यशो भगश्च मा विद्द्यशो मा प्रतिपद्यताम्।।

पार० गृह०।।

अभी जो उपरिवस्त्र वर–कन्या धारण करें, वे यह भावनायें सुदृढ़ कर जायें, जिनसे नव दम्पत्ति आजीवन धन–वैभव, यश से परिपूरित बने रहकर अपना, परिवार का, समाज का और राष्ट्र का ऐश्वर्य सम्मान बढ़ाते रहें। अर्द्धांगिनी की चुनरी के चीर के स्पर्श मात्र से स्नेह भावनायें स्फुरण कर उठती हैं, वैसे ही इस काले कलूटे वस्त्र के विचार मात्र से कज्जल दर्पण प्रकट होकर भारत भूमि के उज्ज्वल द्रश्य प्रस्तुत कर देता है। महर्षि दयानन्द के अनुसार राम–कृष्ण आदर्श योगिराज श्याम वर्ण किन्तु आप्त पुरूष हैं इनका अनुसरण करने पर मनुष्य उज्ज्वल मुखी बनता है।

या अनुरागी चित्त की गति समुझहि नही कोय।
ज्यों–ज्यों बाढ़े श्याम रंग त्यों–त्यों उज्जवल होय।।

पुनर्जन्म

– साभार

जीव अजर और अमर है अर्थात् न उत्पन्न हुआ और न मरेगा। इसका शरीर के साथ सम्बन्ध होना ही जन्म है और संबंध टूटना मृत्यु है।

संसार में जन्म लेने वाला हर मनुष्य या प्राणी एक समान नहीं होता। कोई सुन्दर, कोई कुरूप, कोई मूर्ख, कोई निर्बल, कोई चतुर होता है। कुछ लोग कहते है कि असमानता वास्तविकता नहीं केवल काल्पनिक है। अर्थात् धनाढ्य को भी कोई–न कोई दुःख और दरिद्र को भी कोई–न–कोई सुख अवश्य होता है। राजा और रंक सभी बराबर हैं। लेकिन यह बात ठीक नहीं क्योंकि रंक तो रजा होना चाहता है लेकिन निर्धन रहने के बाद आदमी धनी हो जाता है। ये दोनों अवस्थाएं एक सी नही रहती। अगर सभी प्राणियों की अवस्थाएं एक सी होती तो फिर उन्नति करने का कोई प्रयोजन या अर्थ नहीं होता।

इस प्रश्न के उत्तर भी भिन्न–भिन्न हैं। कुछ लोग कहते हैं कि माता–पिता तथा घर की परिस्थिति भिन्न होने के कारण प्रकृतियां भिन्न हो जाती हैं, लेकिन यह बात गलत है, क्योंकि माता–पिता तथा घर की परिस्थितियों के भिन्न होने का कारण होना चाहिए।

कुछ लोग 'क्यों' का प्रश्न ही व्यर्थ बताते हैं। ईश्वर सबका बनाने वाला इस लिए उसे सबको अपनी मनमर्जी से बनाने का अधिकार है। माली बाग में अनेक प्रकार के फूल लगाता है। मकान बनाने वाला भी किसी पत्थर के दहलीज में तो किसी को मकान के ऊपर लगाता है जिससे वह अच्छा लगे। इस संसार की शोभा भी किसी को राजा किसी को रंक बनाने में है, लेकिन ऐसा उत्तर देने वाले यह नहीं सोचते कि संसार की शोभा जीवों की असमानता का कारण नहीं हो सकती। ईश्वर संसार को इसलिए नहीं बनाता कि उसे सुन्दर वस्तुएं देखने या अपनी शक्ति दिखाने की इच्छा है। वह तो केवल जीव कल्याण के लिए सृष्टि करता है।

प्राणियों की प्रकृतियों तथा परिस्थितियों का कारण या तो यह प्राणी होंगे या यह ईश्वर अथवा कोई तीसरी वस्तु। तीसरी वस्तु या ईश्वर इस अमसमानता का उत्तरदाता नहीं हो सकता। अन्यथा ईश्वर पर अन्याय और क्रूरता दोनों का दोष लगेगा। बिना गलती किए हुए सजा देना अन्याय कहलाता है। यदि ईश्वर ने इनको बनाया है, बिना इनके दोष के उसे दुःख होता है तो ईश्वर वस्तुतः बड़ा क्रूर है। जो लोग यह कहते हैं कि ईश्वर को अधिकार है कि वह जिसे चाहे सुख या जिसे चाहे दुःख दे, ऐसे अधिकार वालों को अन्यायी व क्रूर कहा जाता है। राजा प्रजा को बनाता नहीं। उसका बहुत से दोष हुआ करते हैं जिनके निवारण के लिए उसे कुछ अधिकारों की जरूरत होती है। इसी तरह ईश्वर का भी हाल है।

इससे सिद्ध है कि असमानता का उत्तरदायित्व सीधा जीवों पर है। यदि प्राणी वर्ग असमान परिस्थितियों में असमान प्रकृतियों के साथ उत्पन्न हैं तो सिद्ध होता है कि वे जन्म से पूर्व उपस्थिति थे, और उन्होंने कुछ ऐसे कार्य किए जिनके कारण असमानता हो गई। इसे पुनर्जन्म कहते हैं।

पुनर्जन्म पर लोग यह आक्षेप करते हैं–

१. यदि इस जीवन से पहले कोई जीवन था तो उसकी याद क्यों नहीं रहती? यह आपेक्ष ठीक नहीं क्योंकि याद न रहना अस्तित्व न होने का हेतु नहीं। हमको अपने इस जीवन की बहुत बातें याद नहीं रहती जैसे जब हम ७ बजे सोते और ५ बजे उठते हैं तो इन १० घन्टों की ही याद नहीं रहती। इस तरह याद रहना या न रहना मस्तिष्क की शक्ति के आधीन है। इससे और अस्तित्व से कोई सम्बन्ध नहीं।

२. दूसरा आपेक्ष यह है कि ऐसे सजा देने से क्या लाभ जो सजा पाने वाले को याद ही नहीं रहती, लेकिन लोग यह नहीं समझते कि पाप के छुड़ाने का साधन उन पापों की याद नहीं, उनका सर्वथा भूल जाना है। यदि प्राणी को पिछले जन्म की याद रहती तो वह पुराने संस्कारों की उपस्थिति के कारण कुछ उन्नति न कर पाते।

३. तीसरा आपेक्ष यह है कि अपराध करने वाले को ही देनी चाहिए। कल्पना करो कि 'अ' नामक आत्मा पहले जन्म में सोहन नामी ब्राह्मण था। उसने कुछ अपराध किया जिस कारण इस जन्म में शीतल सुनार बन गया। अपराध तो किया सोहन ब्राह्मण ने और सजा मिली शीतल सुनार को। करे कोई भरे कोई। इससे ईश्वर अन्यायी सिद्ध होता है। यह आपेक्ष करने वाले आत्मा व देह का सम्बन्ध नहीं समझते। सोहन ब्राह्मण व शीतल सुनार की आत्मा तो एक थी, शरीर भिन्न–भिन्न थे, परन्तु शरीर तो कर्त्ता नहीं, साधन मात्र है। अपराध व संघ के साधन एक नहीं होते। किसी को तलवार से मारने पर मुझे फांसी होगी। अर्थात् अपराध का साधन तो तलवार और दण्ड का साधन फांसी होगी। आत्मा एक तो तो शरीर की भिन्नता से व्यक्तियों की भिन्नता नहीं होती।

४. चौथा आक्षेप यह है मनुष्य का स्वाभाविक इसको स्वीकार करने की आज्ञा नहीं देता है कि पहले गधा, घोड़ा था या कभी अगले जन्म में सुअर या कुत्ता हो जाउंगा। यह आक्षेप युक्तिशून्य है। हम यह बात नहीं मानते कि किसी समय हम बिस्तर में मूत्र त्याग करते थे या कोई कुचेष्टा करते थे या वृद्ध होने पर हम निर्बल या अंधे या लंगड़े हो जायेंगे। झूठे आत्मगौरव से कुछ नहीं होता। जो लोग गधा अथवा सुअर होना नहीं चाहते तो उन्हें भी कर्म खराब होने पर ऐसा बनना ही पड़ेगा।

४. थियोसोफिकल के सभासद तो यह मानते हैं कि पुनर्जन्म होता है। उनका कथन है कि वह अपनी अच्छी योनि में होता है, बुरी में नहीं अर्थात् एक गधा मनुष्य हो सकता है लेकिन मनुष्य गधा नहीं हो सकता क्योंकि सृष्टि के नियम उन्नति के हैं, अवनति के नहीं। हम इस सिद्धान्त से सहमत नहीं। दृष्टि के नियम तो उन्नति के हैं, ठीक हैं। लेकिन कर्म करने में मनुष्य स्वतन्त्र है। जैसे करता है वैसा भरता है। यह तो हर व्यक्ति की उन्नति –अवनति देखने से पता लगता है। इसलिए लंगड़ा पुनर्जन्म ठीक सिद्धान्त नहीं हो सकता।

पुनर्जन्म न मानने वालों पर हमारे आक्षेप

शेष पृष्ठ ६ पर

पृष्ठ ५ का शेष

पुनर्जन्म

यह हैं–

१. प्राणियों की प्रकृतियों व परिस्थितियों की असमानता का क्या कारण है? क्या कारण है कि कोई–कोई आठ वर्ष के बालक प्रसिद्ध गवैये होते हैं, किसी–किसी को गाना आता ही नहीं।

२. यदि पुनर्जन्म नहीं होता तो ऐसे प्राणियों की उत्पत्ति क्यों हुई जो एक या दो वर्ष के रहकर या गर्भ में ही मर गये? इनके जीवन का क्या प्रयोजन है? उन्हें स्वर्ग या नर्क मिलेगा तो बेकार क्योंकि जिस अवस्था में वे उत्पन्न हुए उसमें कुछ उत्तरदायित्व संबन्धी कार्य नहीं कर सकते थे।

३. जीवात्मा जब एक सुयंक्त वस्तु है, जिसके टुकड़े–टुकड़े नहीं हो सकते वह सदा रहेगा। जीवात्मा अगर आवागमन के चक्कर में नहीं आता तो उसे इस अनन्त जीवन से केवल दो, चार या सौ–पचास वर्ष ही काम करने का अवसर क्यों दिया गया?

४. ईसाई या मुसलमान मानते हैं कि प्रलय के दिन मुर्दे कब्रों से उठेंगे। प्रश्न है इनके शरीर उठेंगे या जीवात्मा या दोनों। अगर कहो कि जीवात्मा उठेंगे तो उन्हें ताजे शरीर मिलेंगे तो यह उनका पुनर्जन्म होगा। जो आक्षेप पुनर्जन्म के विरोधी करते हैं वह सब लागू होंगे। कल्पना की किजिए जैद एक मनुष्य था वह मर गया। उसकी कब्र पर घास उगी। यह घास उसके अंगों का परिवर्तित रूप थी। इस घास को बकरी ने खा लिया। बकरी का मांस बकर नामी दूसरे मनुष्य ने खाया। इस तरह जैद के शरीर के अवयव बकरी के शरीर के अवयय हो गये। प्रलय के दिन जब जैद और बकर की रूहें उठेंगी तो किस शरीर में प्रत्येक अंग के लिए झगड़ा होगा? दूसरा प्रश्न यह है कि वे प्रलय तक कहां रहेंगी और क्या करेंगी? जो लोग समझते हैं कि कब्र में रूहें रहती हैं तो उन्हें यह नहीं मालूम कि जब रूहें शरीर में रहती हैं तब तक शरीर को मरा हुआ नहीं कह सकते। ईसाई लोग ईसा का मरकर गाड़ा जाना और तीसरे दिन कब्र से उठना मानते हैं। वह इतना नहीं विचार करते कि मरने पर रूह शरीर से अलग हो जाती है। कब्र में लाश रहती है, रूह नहीं। फिर कब्र से कोई कैसे उठ सकता है? ईसाई ऐसा नहीं मानते। वस्तुतः पुनर्जन्म को बिना माने काम नहीं चल सकता। यदि पुनर्जन्म नहीं तो प्रलय तक *जीव क्या करते रहेंगे? क्या ईश्वर ने जीवों को निकम्मा पड़े रहने को* बनाया है?

पूजनीय वृक्ष हमारे

– वेद प्रकाश शास्त्री

पूजनीय वृक्ष हमारे, शुद्ध वायु कीजिए।
वायु दूषित दूर करके, प्राणवायु दीजिए।।
जरूरी है प्राणवायु देखो, हर जीव–जन्तु के लिए।
रक्षार्थ मानव का कर्त्तव्य यही, तत्पर दिखे हर वृक्ष के लिए।।२।।
एक बचाते हैं जब तलक, सैकड़ों कट जाते हैं तभी।
कैसे पूजन करें हे वृक्षदेव, लज्जित हैं हम सभी।।३।।
अशोक के दर्शन होते नहीं, भला शोक कैसे मिटेगा।
न है वटवृक्ष, न है सावित्री, सोचो कैसे सौभाग्य बढ़ेगा।।४।।
कमल, केवड़ा, दर्भ, दूर्वा, कुश और आम हमारे पूजनीय हैं।
तुलसी न रही जग में, कैसे कहोगे–तुलसी विवाह वन्दनीय है।।५।।
च्यवन ऋषि च्यवनप्राश देकर, आंवला तेल से केश काले गर गए।
न केवल धूप, दीप नैवेद्य चढ़ाए, पौधारोपण करें नित नए।।६।।
पिप्पलाद ने खाए पीपल के फल, होते थे वे भी शक्ति भरे।
प्राणवायु देते रहेते रात–दिन, हर व्यक्ति अभिनन्दन करे।।७।।
वृक्षों के नमन है "वेद"करता, वृक्ष वमिधा दान करें।
फूल–फल, जड़ी–बूटियां देखकर, यज्ञ से पावन वर्षा करे।।८।।
वृक्ष लगाएं–यज्ञ रचाएं, प्रभुवर सुबुद्धि ऐसी दीजिए।
नारी–नर हावें सभी वृक्षप्रमी, भाव उज्ज्वल कीजिए।।९।।

देश द्रोह

वीर सावरकर

जिस दिन एडवर्ड सप्तम का राज्याभिषेक हो रहा था, उस दिन हमारे देश के कुछ चाटुकार भी समारोह आयोजित कर रहे थे।

महान क्रांतिकारी वीर सावरकर (विनायक सावरकर) उस समय किसी कार्यवश त्र्यंबकेश्वर गये हुए थे। उन्होंने ऐसा ही नजारा वहां भी देखा। उनका मन दुःखी हो गया। एक समारोहस्थल पर पहुंचकर उन्होंने नौजवानों से कहा–"धिक्कार है तुम्हें, जो तुम ऐसी खुशियां मना रहे हो। क्या तुम्हें यह अनुभव नहीं होता कि यह अभिषेकोत्सव नहीं है, बल्कि तुम्हारी गुलामी का उत्सव है? क्या तुम यह अनुभव नहीं करते कि विदेशी शासक के प्रति राजभक्ति का प्रदर्शन तुम्हारी अपने देश और जाति के प्रति द्रोह को अभिव्यक्ति है?"

आयोजकों ने क्षमा मांगते हुए अपना डेरा–डंडा समेट लिया।

मैं तो जीवित रहूंगा

वीर सावरकर को ब्रिटिश हुकूमत ने कालेपानी की सजा देकर अंडमान भेज दिया। उन्हें दो जन्मों (तकरीबन ४० वर्षों) की सश्रम कारावास की सजा दी गयी थी।

उनके गले में ४० वर्ष कारावास' का पट्टा देखकर जेलर ने उनसे पूछ, "क्या तुम ४० वर्ष की सजा काटने तक जीवित रह सकोगें?"

वीर सावरकर ने बिना विचिलित हुए बेसाख्ता कहा, "मैं तो जरूर जीवित रहूंगा, पर यह भी तय है कि ब्रिटिश हुकूमत की जड़ें इतनी अवधि के पहले ही भारत से नेस्तनाबूद हो जाएंगी।"

सावरकर की भविष्यवाणी अक्षरः सच साबित हुई।

नाम 'आजाद' घर 'जेलखाना'

उस समय महात्मा गांधी का असहयोग आंदोलन जोरो पर था। चंन्द्रशेखर भी स्वदेशी की भावना से प्रभावित हुए बगैर न रह सका। फलतः हाथ में झंडा लेकर जोशीले नारे लगाते हुए वह भी छात्रों के एक जुलूस में शामिल हो गया।

पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया और मैजिस्ट्रेट के सामने हाजिर किया।

मैजिस्ट्रेट ने पूछा, "नाम?"

"आजाद!"

"पिता का नाम?"

"स्वाधीनता।"

मैजिस्ट्रेट को लगा कि लड़का जिद्दी है। उसका अगला सवाल था, "और तुम्हारा घर?"

आजाद ने उसी तल्खी से जवाब दिया, "जेलखाना।" अब तो मैजिस्ट्रेट गुस्से उबल पड़ा। उसने आजाद को १५ बेंतों की सजा सुनायी। जेल के सामने खुल मैदान में आजाद ने "वंदेमातरम्" और "महात्मा गांधी जी जय" के उद्घोष के साथ नंगी पीठ पर बेंतों की मार सह ली और उफ तक न की।

जेल से बाहर आने पर डॉ० संपूर्णानन्द ने चंद्रशेखर को 'आजाद' नाम से संबोधित किया, फिर तो वह इसी नाम से लोकप्रिय हो गये– चंद्रशेखर आजाद।

शाप– हजारी प्रसाद द्विवेदी

उन दिनों आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के पद पर थे। एक दिन विद्यार्थियों ने अपनी किसी मांग को लेकर उन्हें घेर लिया और अपनी बात मनवाने के लिए जिद करने लगे। कुछ छात्रों ने शोरगुल भी करना शुरू कर दिया।

द्विवेदी जी ने सबको शांत करते हुए अपना संक्षिप्त–सा वक्तव्य दिया और अंत में कहा, "तुम सबने बिना किसी वजह के मेरी अवमानना की है। अतः मैं तुम्हें शाप देता हूं कि तुममें से हर कोई इस जन्म में अथवा अगले जन्म में किसी–न किसी विश्वविद्यालय का वाइस चान्सलर जरूर बने।"

यह सुनते ही सभी छात्र हंस पड़े और देखते –ही देखते तनाव खत्म हो गया। छात्रों ने अपनी गलती मानी और आचार्य प्रवर ने क्षमादान करके सबको खुशी–खुशी विदा किया।

तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव 21 से

मैनपुरी। आर्य समाज मंदिर में तीन दिसवीय वार्षिकोत्सव २१ मई से शुरू होगा। संस्था के प्रधान महेन्द्र आर्य ने बताया कि २१ से २३ मई तक रोजाना सुबह ५ से ६ बजे तक योग, व्यायाम, सात से ६ बजे तक ब्रह्मयज्ञ एवं देवयज्ञ, सुबह ६.३० बजे से दोपहर १२.३० बजे तक भजन, प्रवचन के बाद शाम तीन बजे से ६.३० बजे तक विभिन्न सम्मेलन होंगे। तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव में बाहरी जिलों के आर्य विद्वान भाग लेंगे।

राष्ट्र कल्याण महायज्ञ एवं वेद कथा का आयोजन

स्थान– जंगल छत्रधारी, बंगला चौराहा, पो0 झुंगिया बाजार, गोरखपुर

निकट– गुलरिहा थाना से 1 कि.मी. पूरब

दिनांक 21.5.2018 से 23.05.2018 तक

प्रधान/अध्यक्ष पं0 प्रमोद कुमार आर्य मो० : ६२३५६५८११७, ८७८७०५३८०८

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद

के तत्वावधान में

शनिवार 9 जून 2018 से रविवार 17 जून 2018 तक

विशाल युवक चरित्र निर्माण व व्यक्तित्व विकास शिविर

स्थान– दयानन्द मॉडल स्कूल, बी ब्लॉक, विवेक बिहार, दिल्ली–95

(निकट मैट्रो स्टेशन झिलमिल व दिलशाद गार्डन)

आप उद्घाटन व समापन समारोह के अवसर पर सपरिवार सादर आमंत्रित हैं।

युवा निर्माण में तन, मन, धन से सहयोग प्रदान करें

समारोह के पश्चात् "ऋषि लंगर" अवश्य ग्रहण करें।

आनन्द चौहान — शिविर संरक्षक
डॉ0 अनिल आर्य — शिविर अध्यक्ष
यशोवीर आर्य — राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
महेन्द्र भाई — शिविर संयोजक

विश्व कल्याण महायज्ञ एवं वेद मंदिर निर्माण चार दिवसीय वैदिक सत्संग, यज्ञ एवं आध्यात्मिक प्रवचन का भव्य आयोजन

दिनांक – 21, 22, 23, 24 मई सन् 2018

आयोजक–महर्षि दयानन्द सरस्वती योग संस्थान "आर्य समाज" महरौनी (ललितपुर)

लखनलाल आर्य (शिक्षक) — मंत्री
ठा0 रामप्रताप सिंह — कोषाध्यक्ष

मो० ८६०१४०६६५०

ओ३म्

गार्गी वैदिक कन्या गुरुकुल कनियान

ग्राम कनियान जिला शामली, उत्तर प्रदेश (पिनकोड-247771)

गार्गी वैदिक कन्या गुरुकुल कनियान, जिला शामली, उत्तर प्रदेश में कक्षा चतुर्थ से विशारद शास्त्री तक प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं। गुरुकुल में स्वच्छ सुन्दर भवन, वैदिक संस्कार युक्त वातावरण, छात्राओं के शारीरिक विकास हेतु पौष्टिक भोजन, दुग्ध हेतु गऊशाला, सुदृढ़ सुरक्षा व्यवस्था, सुसज्जित खेल के मैदान व खेल व्यवस्था, कम्प्यूटर शिक्षा व वैदिक व्याकरण आदि सहित आधुनिक शिक्षा की समुचित व्यवस्था है। कन्याओं के सर्वाङ्गीण विकास के लिए अपनी पुत्रियों को गुरुकुल में शीघ्र प्रवेश दिलायें। स्थान सीमित हैं।

–प्राचार्या
आचार्या निर्मला आर्या
(पूर्व प्रधानाचार्या–आर्य कन्या गुरुकुल, मोर माजरा, हरियाणा)

सम्पर्क सूत्र: 6395370528, 9897499545

प्रवेश प्रारम्भ

इन्दौर। गुरू विरजानंद गुरूकुल, इन्दौर में आर्ष पाठ्यविधि से कक्षा ४थीं उत्तीर्ण बालकों के लिए प्रवेश प्रारंभ हैं। जो अभिभावक वैदिक संस्कृति, वेद, यज्ञ, योग एवं संस्कार युक्त शिक्षा दिलाना चाहते हैं वे शीघ्र से शीघ्र संपर्क करें। प्रवेश हेतु स्थान सीमित है।

१. आर्ष पाठ्यविधि, २. संस्कृत समभाषाण एवं इंग्लिश स्पोकन, ३. सस्वर वेदपाठ शिक्षा, ४. कम्प्यूटर ज्ञान, ५. योग अभ्यास एवं शारीरिक प्रशिक्षण।

गुरू विरजानन्द गुरूकुल में सीमित स्थान है अतः प्रवेश हेतु शीघ्र संपर्क करें।

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती	आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार	प्रणवीर शास्त्री
कुलपति	अधिष्ठाता	आचार्य
गुरू विरजानंद गुरूकुल, इन्दौर	गुरू विरजानंद गुरूकुल, इन्दौर	गुरू विरजानंद गुरूकुल, इन्दौर

संपर्क सूत्र– 9977987777, 9977967777, 9467677589, 9202213410

ओ३म

आर्य समाज, यासीनपुर, हरदोई (उ0प्र0)

कैम्प/शिविर कार्यालय :– कैनाल रोड, प्रगति नगर, हरदोई का

वार्षिकोत्सव दिनांक 25, 26 एवं 27 मई 2018 ई0 दिन शुक्रवार से रविवार तक सम्पन्न

भावभरा आमन्त्रण पत्र

महोदय,

निवेदन है कि आर्य समाज, यासीनपुर, हरदोई का वार्षिकोत्सव दिनांक 25 से 27 मई 2018 दिन शुक्रवार से रविवार तक सम्पन्न हो रहा है। जिसमें आपकी गरिमामयी उपस्थिति सादर प्रार्थनीय है।

मुख्य अतिथि दिनांक 27 मई 2018 दिन रविवार

- श्री सुभाष यदुवंश जी (प्रदेश अध्यक्ष) युवा मोर्चा भारतीय जनता पार्टी
- विशिष्ट अतिथि - विवेक कैलाश यादव (वरिष्ठ भाजपा नेता) पुत्र- स्व0 कैलाश नाथ यादव (सांसद/ मंत्री) नेता विरोधी दल (बनारस)
- अध्यक्षता - डा0 धीरज सिंह कार्यवाहक प्रदेश अध्यक्ष - आर्य प्रतिनिधि सभा (उ0प्र0)
- ध्वजारोहण - स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी प्रदेश मन्त्री - आर्य प्रतिनिधि सभा (उ0प्र0)

निवेदक :
आचार्य सत्यवीर प्रकाश आर्य (एडवोकेट)

विनीत :
उमेश वर्मा (एडवोकेट)
मंत्री- आर्य समाज अंतरंग सदस्य आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, सम्पादक एक ही रास्ता पत्रिका
मो0- 9450909573

अंतर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन,2018

गुरुकुल कांगड़ी,हरिद्वार (उत्तराखंड)

6,7,8 जुलाई 2018

अध्यक्षता: स्वामी प्रणवानंद जी

आयोजक: सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

9468165946 9466308110 9868211979 9492894691

मीडिया सहयोगी:-Mission Aryavart App & Youtube 9354840454

ओ३म

स्वामी आर्यवेश – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली
डा. धीरज सिंह आर्य – प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.
स्वामी धर्मेशवरा नन्द – मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.
आचार्य स्वदेश – वृन्दावन गुरुकुल, उ.प्र.
के सानिध्य में

कन्या–चरित्र निर्माण एवं योग शिविर

20 मई 2018 से 26 मई 2018 तक

–: आयोजक :–

धनश्याम दास सक्सेना (एड.)	रामस्वरूप आर्य	नरेन्द पाल वाधवा
अध्यक्ष	मंत्री	कोषाध्यक्ष
मो. 9412521189	मो. 941064736	मो. 9837092734

आर्य समाज बल्देवाश्रम, खुर्जा (बुलन्दशहर)

शिविर संयोजिका : श्रीमती शशी बाला प्रधानाचार्य, ए.के.पी. इंटर कॉलेज, खुर्जा – मो. 9690772435
सह शिविर संयोजिका : श्रीमती पुष्पांजलि शर्मा, गाइड केप्टन–ए.के.पी. इंटर कॉलेज, खुर्जा – मो. 9411911957

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
.....
.....

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी शिवनारायण आर्य वानप्रस्थ आश्रम भग्गड़वा बहराइच के उद्घाटन् की झलकियां

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक – मुद्रक –प्रकाशक –श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है– सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।